International Journal of Arts & Education Research

गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर

अमित कुमार शर्मा*[1], डा0 प्रदीप सिंह दहल[2]

[1]शोध छात्र, सी0एम0जे0 वि0वि0, शिलॉग।

[2]इकडोल, शिक्षा विभाग, एच0 पी0 यू0, शिमला।

सार

उपनिषदों में विवेचित विश्व बोध की भावना को रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने आत्मसात किया। उन्हें सम्पूर्ण जीवजगत में एक ही दिखाई देती है। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने कहा है! मानवता को पहले अधिक विकसित भावुकतापूर्ण एवं शक्तिशाली एकता की अनुभूति करना है। उन्हें इस विश्व बाह्य विविधताओं के बीच एकता नजर आती है। और वे इस विश्व के अन्तराल में इनकार एक आध्यात्मिक यर्थाथ की अनुभूति करते हैं। अन्नत का ज्ञान और उनकी शक्ति आकाश के तारों की अपेक्षा मनुश्य की आत्मा में अधिक उपलब्ध होती है। ''धरती के मानव मात्र ईश्वरीय सितार के स्वर्णतार के समान है'' रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने मानव करूणा के प्रति मुझमें एक विशेष प्रकार संवेदनशीलता थी। टैगोर का मानवतावादी दर्शन उनके समस्त शैक्षिक चिन्तन में दिखाई देता है। टैगोर जी की विचारधारा में आदर्शवाद की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कि प्रत्येक छात्र को प्रकृति के द्वारा बहुत सारी शक्ति मिली हुई है। जीवन की आवश्यकताओं की पूति के लिए इस शक्ति का बहुत थोड़ा सा अंश ही प्रयोग में लाया जाता है। शिक्षा का काम केवल जीवनयापन दक्षता प्रदान करना नहीं है। बल्कि बालक में निहित सृजनात्मक तत्व का विकास करना है। किसी न किसी व्यक्ति का जन्म किसी न किसी उचित लक्षण की प्राप्ति के लिए होता है। वह अपनी लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसार हो सके। इसके लिए शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। ''जीवन का लक्ष्य आत्मकेन्द्रित स्वार्थ में नही है। अपितू अपने आप को लुटा देने में है। दीपक यदि अपने तेल को संचित रखना चाहे तब उसक जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा वह स्वयं भी अंधकार में रहेगा और लोगो को भी रखेगा अतः उसके जीवन का लक्ष्य तो स्वयं प्रकाशित होने तथा दूसरों को प्रकाशित करने में है।''

मानव जाति की एकता सम्पादन के हेतु विश्वभारती की स्थापना की। सौभाग्य से मेरे ज्येष्ठ भ्राता का मत था कि बालक को विदेशी माध्यम से शिक्षा नहीं मिलनी चाहिए। मातृ भाषा से बालक का सर्वागीण विकास होता है।

बालक अन्नत सुखों की भूमि में विहार करता था परन्तु उसने इस पृथ्वी पर आने का निश्चय किया क्योंकि माँ की बाहों का आलिंगन तथा उसके होंठो का चुम्बन स्वर्गीय सुख की अपेक्षा अधिक मधुर थे हम बालक की भूगोल पढ़ाने के फेर में उससे उसकी पृथ्वी छीन लेते हैं। तथा व्याकरण पढ़ाने लिए उसकी सहज भाषा छीन लेते हैं। उसकी भूख काव्य के लिए है। किन्तु उसके सम्मुख मात्र तथ्यों एवं तिथियों से भजे पूरे

अभिलेख प्रस्तुत कर लिद जाते हैं। बालक जन्म तो लेते हैं। जगत में पर हम उन्हें बेजान ग्रामोंफोन के जगत में ढकेल देते हैं चारों ओर जो यह प्रकृति फैली है। वह हमारी महान शिक्षका है। वह हमारे जीवन को रंगीन भावनाओं के सांचे में ढालती है। और इसके साथ ही अन्तरात्मा के प्रति मनन के लिए प्रेरणा देती है। प्रकृति मां के समान व्यक्ति का संवेगात्मक नैतिक एवं अध्यात्मिक पोषण करती है।

टैगोर जी का कहना था शिक्षका को आजीवन नये अनुभव प्राप्त करते रहना चाहिए अतः शिक्षक तब तक वास्तविक रूप से अध्यापन नहीं कर सकता जब तक की वह स्वयं निरन्तर अध्ययनशील न रहे। अतः शिक्षक के जीवन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य अध्ययनशीलता है। शिक्षण की प्रक्रिया पर सबसे अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है। जिस वातावरण में बच्चा रहता है। वह वैसा ही बन जाता है।

माँ सारा सवेरा पढ़ते-पढ़ते बीत गया ।

तुम कहती हो कि अभी तो बारह ही बजे हैं।

अरे जब रात्रि को भी बारह ही बज सकते हैं।

जब बारह बजे हैं। तब रात्रि क्यों नही हो जाती।

हमें बालक को आध्यात्मिक संस्कृति, पाश्चात्य विज्ञान, बौद्धक एवं कालात्मक शिक्षा दक्षतापरक शारीरिक श्रमजन्य एवं धर्म निरपेक्षता की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

रूसो के समान टैगोर समाजसम्मत आचरणों को बालक पर थोपना नहीं चाहते है, परन्तु वह यह भी नहीं चाहते कि बालक को कोई आचरण सिखाता ही न जाय। रूसा नकारात्मक शिक्षा में विश्वास करता था (जो सच्चाई के पथ पर ले जाये एवं बुराई से बचाये) का समर्थन करता था।

टैगोर जी ने भौतिकवादी प्रकृतिवाद को छोड़कर आध्यात्मिक प्रकृतिवाद का सहारा लिया टैगोर की सबसे बड़ी देन उनका साम्यवाद है। अन्तराष्ट्रीय इसका आरम्भ विश्व भारती ये बीसवीं सदी ये ही आरम्भ कर दिया था टैगोर जी के दर्शन की अमिट छाप है। बर्ट्रेण्ड रसेल ने गणितीय दर्शन पर विश्व विख्यात कार्य किया उन्होंने अपनी पुस्तक (प्रिंसिपल ऑफ मैथमेटिक्स) में अणु पर सबसे अधिक बल दिया है। अणु का विश्लेषण सम्भव नहीं है अतः रसल ने सत्य को एक अणु माना है। उनका कि ये भौतिक अणु पर नहीं पहुचना चाहता बल्कि अध्यात्मिक अणुपर पहुँचना चाहता हूँ रसेल का कहना था कि बच्चे में (शक्ति, साहस, संवेदनशीलता, बुद्धि) विकास अत्यन्त आवश्यक है।

रसेल ;मगद्ध का पाप न मानकर जीवन की एक सामान्य प्रक्रिया मानते थे उनका कहना था कि हम उन्हीं छात्रों को विश्वविद्यालयी शिक्षा दे। हेक्सले की भांति रसेल भी वैज्ञानिक शिक्षा के समर्थक थे अतः रसेल ने विस्तृत शिक्षा योजना प्रस्तुत की।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

परिशिष्ट

टैगोर रवीन्द्रनाथ-द पोएटस स्कूल विश्वभारती बुलेटिन संख्या-9

ओड डा0एल0 के - शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि पृ0 227-236

पाण्डेय डा0 रामशकल - विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री पृ0 173

रसेल - शिक्षा रूपरेखा, राजकमल दिल्ली 1963 ए पृ0

सक्सेना व चतुर्वेदी - उदीयमान भारतीय समाज ये शिक्षक पृ0 116

सरकार, एस0सी0 : टैगोर्स एजुकेशन फिलासफी एण्ड एक्सपैरीमैन्ट्स

विश्वभारती रिसर्च पब्लिकेशन, 1961

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.